केरल से अनामिका अनु

केरल के कवि और उनकी कविताएँ

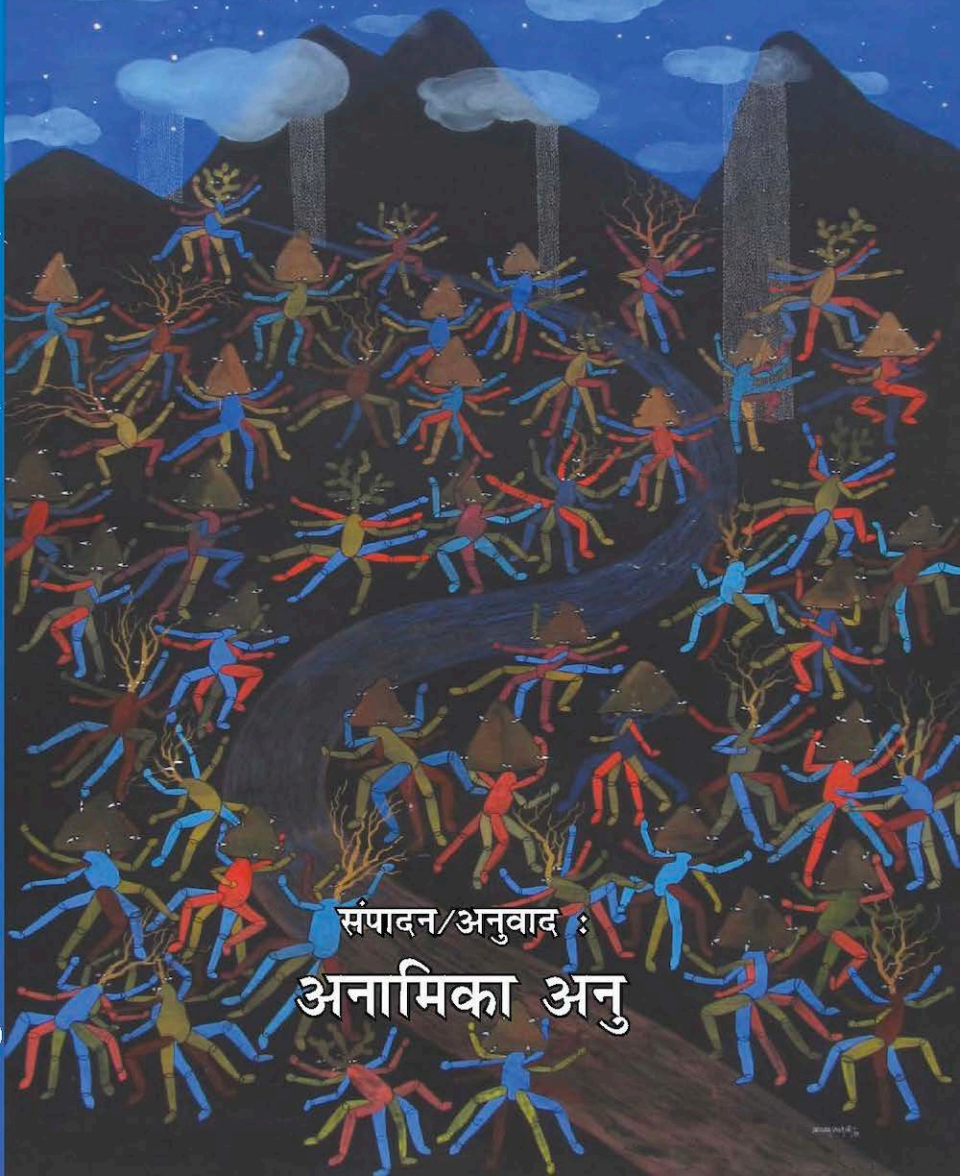

संपादन/अनुवाद :

अनामिका अनु

डॉ. अनामिका अनु

एम एस सी (विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक)

पी एच डी (इंस्पायर अवार्ड, DST)

2020 भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार

काव्य–संग्रह : इंजीकरी (वाणी प्रकाशन, रजा फाउंडेशन)

प्रकाशन : हंस, समकालीन भारतीय साहित्य, नया ज्ञानोदय, वागार्थ, बया, परिकथा, मंतव्य, कादम्बिनी, आउटलुक, आजकल, लमही, मधुमती, हरिगंधा, स्त्री काल, ललनटॉप, नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, प्रभात खबर, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका आदि पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन।

पता : अनामिका विला, एस एन आर ए हाउस नंबर 30 (A), कावुलेन, श्रीनगर, त्रिवेंद्रम, केरल– पिन 695008

मो. : 8075845170

ई–मेल : anamikabiology248@gmail.com

₹ 250.00

ISBN 978-93-93091-37-6

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

नई दिल्ली

फोन : 99682-88050, 82879-88726

केरल से अनामिका अनु

केरल के कवि और उनकी कविताएँ

केरल से अनामिका अनु

केरल के कवि और उनकी कविताएँ

संपादन/अनुवाद :
अनामिका अनु

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-93091-37-6

4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मो.: 9968288050, 9911866239

ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2022

© अनामिका अनु

मूल्य : ₹ 250/-

आवरण पेंटिंग : देविदास आगासे

पेंटिंग का शीर्षक : जॉय ऑफ एरायवल (Joy of arrival)

लेज़र कम्पोजिंग : लिटिल बर्ड, नई दिल्ली

मुद्रक : बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

KERAL SE ANAMIKA ANU

KERAL KE KAVI AUR UNKI KAVITAYEN

Sampadan Aur Anuwad by ANAMIKA ANU

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखिका/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

समर्पित

बाबूजी

माँजी

प्रिय पंकज

पियाली, लीया

और

केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को...

आभार

मैं डेढ़ दशक से केरल के जनजीवन को देख और समझ रही हूँ। कण-कण में व्याप्त शब्दबोध, लय, ताल, रिदम, दर्शन और विचार मुझे स्पंदित करती रही है। इस स्पंदन ने मुझे नया जीवन दिया। कामरेडों के सत्संग और यहाँ के सांस्कृतिक जीवन का ही यह प्रभाव था कि मुझमें चीजों को सूक्ष्मता और गंभीरता से देखने का धैर्य आ पाया। आत्ममुग्ध वाचालिक प्रवृत्तियों से इतर यहाँ के सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन की प्रखर चिंतनशीलता ने मेरी समझ में तार्किक विस्तार किया। चीजों के प्रगट और अप्रगट दोनों स्वरूपों को देख पाने की दृष्टि ने मेरे भीतर के कवि और लेखक को जगाया ताकि मैं उन अनुभूतियों को कागज पर फैला सकूँ। मैंने लिखना शुरू किया और इन कागजों को क्षोभमंडल में उड़ा दिया ताकि ये मुझसे स्वतंत्र हो जाएँ और जिसे भी मिलें उसके हिस्से का शब्द उस तक पहुँच पाए।

यहाँ मैं अंग्रेजी और मलयालम के कई वरिष्ठ और युवा कवि लेखकों से मिली। उनके चिंतन की जमीन इतनी उर्वर और विस्तृत थी कि मैं उनको सुनने-समझने के हर अवसर में, हर शब्द, हर पंक्ति पर गौर करती। धीरे-धीरे कुछ कवि, लेखक, चिंतक, विचारकों के लिखे और उस लिखे के अर्थ मुझे सुखद लगने लगे। यह सुखद अनुभूति मैं हिंदी भाषा के साथियों के साथ साझा करना चाहती थी। और इसी क्रम में मैंने कुछ कवि की कविताओं का अनुवाद किया।

मैं डेढ़ दशक से केरल के काव्य संसार को सूक्ष्मता से देख और समझ रही हूँ। यह वह समय है जब कई पीढ़ियाँ एक साथ कविता लिख रही हैं और हर महत्वपूर्ण कवि का शिल्प, उसकी संवेदना और दृष्टि दूसरे से अलग और अनोखी है। विपुल प्रतिभाओं के बीच फल-फूल रही काव्य प्रवृत्तियों को इंगित करना, समझना और हिंदी के पाठक तक ले जाना मुझे बहुत जरूरी लगा।

यहाँ की समृद्ध काव्य संस्कृति से हिंदी के पाठकों को रू-ब-रू कराने के ध्येय से मैंने इन कविताओं का अनुवाद बड़े धैर्य से किया है। इसमें ग्यारह

कवि हैं जिनमें दस जीवित हैं और अलग-अलग आयु वर्ग से आते हैं और इनकी चिंतन प्रवृत्तियाँ भी एक दूसरे से भिन्न हैं।

अय्यप्पा पणिक्कर नहीं हैं मगर उनकी काव्य परंपरा है। वह कवि जिसने पूरे केरल में काव्य आंदोलन का सूत्रपात किया। ऑटो चालक से लेकर प्रशासक, पत्रकार से लेकर प्रोफेसर, मजदूर से लेकर गृहिणी तक को काव्य परंपरा से जोड़ने की जी-तोड़ कोशिश की।

चन्द्रमोहन एस केरल के युवा दलित कवि हैं, दुनिया की कई प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में इन्हें जगह मिलती रही है। मीरा नायर, मैथ्यू जैस्पर, गीता जानकी, सोनी सोमाराजन केरल के युवा कवि हैं, अंग्रेजी में उम्दा कविताएँ लिखते हैं।

गोपीकृष्णन कुट्टूर और जोर्ज आर, नीरदा सुरेश, गीता नायर : ये केवल कवि नहीं हैं, ये केरल की काव्य परंपरा में सततता जोड़ रहे हैं। ये हर उम्र के कवियों को खोजकर उनको मंच प्रदान कर, कविता पर चर्चा कर, केरल की समृद्ध काव्य-परंपरा को नवजीवन दे रहे हैं।

के. सच्चिदानंदन कविता का विश्वविद्यालय हैं, दुनिया भर में उनकी कविताओं को गहरे सम्मान और मौलिक चिंतन के लिए पढ़ा और समझा जाता है।

कुल मिलाकर ये ग्यारह कवि आज के केरल की कविता का एक सुंदर परिदृश्य गढ़ते हैं। ये अलग रंग, ताल और लय की कविताएँ हैं जो हिंदी-काव्यकोश में अपने पूरे सौष्ठव के साथ आनी चाहिए ताकि हिंदी के पाठक केरल के इस रंग से अवगत हो सकें। यह दक्षिण से उत्तर को जोड़ने की काव्यात्मक कोशिश है।

–डॉ. अनामिका अनु

अनुक्रम

	आभार	*vii*
1.	के. सच्चिदानंदन	11
2.	अय्यप्पा पणिक्कर	34
3.	गोपीकृष्णन कुट्टूर	44
4.	जोर्ज आर.	52
5.	चंद्रमोहन एस.	57
6.	गीता जानकी	63
7.	मीरा नायर	69
8.	नीरदा सुरेश	76
9.	मैथ्यू जैस्पर	85
10.	गीता नायर	93
11.	सोनी सोमाराजन	102